चंडीगढ़ पुलिस के शहीद जवान जिन स्कूलों में पढ़े थे, वहां पढ़ने वाले छात्रों को 10वीं में अव्वल पर मिलेगी 11 हजार की छात्रवृत्ति

राज्यपाल बदनौर ने अबोहर में हुए समागम में शहीद जगजीत सिंह के परिवार को किया सम्मानित

भास्कर न्यूज़ | अबोहर

चंडीगढ़ पुलिस में नौकरी के दौरान शहीद होने वाले पुलिस कर्मचारियों की शहादत को याद रखने व उनको सम्मान देने के उद्देश्य चंडीगढ़ पुलिस ने नई पहल की है। इसके तहत जिन स्कूलों में उनके शहीद मुलाजिम कभी पढ़ते थे अब वहां दसवीं में फर्स्ट आने वाले छात्र को 11 हजार रुपए की छात्रवृत्ति दी जाएगी। इस योजना की शुरुआत बुधवार को अबोहर से पंजाब और चंडीगढ़ के राज्यपाल वीपी सिंह बदनौर ने मैट्रिक में प्रथम रहने वाली छात्रा सिमरन को 11 हजार रुपए छात्रवृत्ति देकर की।

बता दें कि देश में 21 अक्टूबर को पुलिस के शहीद जवानों की याद में श्रद्धांजलि सभाएं होती हैं। उसी कड़ी के तहत चंडीगढ़ पुलिस ने शहीदों की याद को ताजा रखने के उद्देश्य से लगभग 30 साल बाद इस प्रकार नए कार्यक्रम की शुरुआत की। समागम में राज्यपाल ने अबोहर उपमंडल के गांव मौजगढ़ निवासी शहीद जगजीत झाझड़िया की पत्नी गायत्री देवी को शॉल भेंट करके सम्मानित भी किया। बाजार नं 4 स्थित इलाके के सबसे पुराने और कभी पंजाब में अव्वल स्थान पाने वाले सरकारी स्कूल में ये कार्यक्रम हुआ। चंडीगढ़ पुलिस के डीजीपी तेजिन्द्र सिंह लूथरा ने इस कार्यक्रम में विशेष रुप से शिरकत की, उन्होंने जगजीत की शहीदी को विस्तार से बताया।

इस अवसर पर बठिंडा जोन के आईजी एमएस छीना, जिला फाजिल्का के एसएसपी केतन बलिराम पाटिल, जिला उपायुक्त ईशा कालिया, चंडीगढ़ के एसएसपी सुषांत आनंद, अबोहर के एसपी अमरजीत सिंह मटवानी, डीएसपी गुरबिन्द्र सिंह संघा, समस्त थानों के थानेदार, स्कूल प्रिंसीपल सुशील गोयल, वाईस प्रिंसीपल शीशपाल ज्याणी, अबोहर के तहसीलदार व पुलिस और प्रशासन के स्थानीय अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस दौरान अतिथियों ने चंडीगढ़ पुलिस द्वारा शहीदों के लिए बनाई गई पुस्तिका का भी विमोचन भी किया।

इतनी देर बाद शुरुआत इसलिए क्योंकि इतिहास कोई नहीं बदल सकता : राज्यपाल

राज्यपाल वीपी सिंह बदनौर ने इस दौरान कहा कि सभी के मन में ये सवाल पैदा हो रहा होगा कि आखिर इतने सालों के बाद इस प्रकार के कार्यक्रमों की शुरुआत करने का क्या कारण होगा। कारण साफ है कि इतिहास कोई नहीं बदल सकता। पुलिस विभाग के शहीदों को याद रखने के उद्देश्य से ही यह योजना शुरू की जा रही है। उन्होंने कहा कि हर बार कार्यक्रम वहीं हुआ करेगा जहां शहीदों ने अपनी 10वीं कक्षा को पास किया था।

काफी प्रसन्न हूं कि किसी ने याद तो किया, वरना जगजीत को कोई जानता नहीं था : पत्नी

शहीद जगजीत सिंह की पत्नी गायत्री देवी ने कहा उन्हें बहुत खुशी हुई कि उनके पति की याद में पहली बार ऐसा कार्यक्रम करवाया गया। इससे पहले इस इलाके में किसी को नहीं पता था कि शहीद जगजीत सिंह कौन थे। उन्होंने चंडीगढ़ पुलिस का धन्यवाद किया और स्थानीय प्रशासन से मांग कि गांव मौजगढ़ में उनके पति के नाम से सड़क का निर्माण करवाया जाए।

कौन हैं शहीद जगजीत सिंह

जगजीत सिंह का जन्म 10 अक्टूबर 1951 को मौजगढ़ में हुआ। दसवीं उन्होंने अबोहर के [illegible] से की। [illegible] चंडीगढ़ से चंडीगढ़ पुलिस में [illegible] 1972 को चयन हुआ। 39 सेक्टर में थाने के इंस्पेक्टर के तौर पर उनकी तैनाती हुई। [illegible] जुलाई 1988 को चंडीगढ़ के 45 सेक्टर के एक घर में घुसे आतंकवादियों से लोहा लेने के दौरान वे शहीद हो गए। उनके नाम 24 [illegible] पत्र, 8 कोमेंडेशन क्लास वन प्रमाण पत्र 2100 [illegible] पुरस्कार और पुलिस मेडल फॉर गैलेंटरी अवार्ड शामिल है।